

श्री हनुमान चालीसा अर्थ सहित

पाठ: गीता प्रेस, गोरखपुर • अर्थ: hanumanchalisapdf.in

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।

बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

अर्थ: श्रीगुरु के चरण-कमलों की धूल से अपने मन रूपी दर्पण को साफ करके मैं श्री रघुबर (श्रीराम) के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों फल देने वाला है: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।

बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

अर्थ: अपने को बुद्धिहीन जानकर मैं पवन-कुमार हनुमान जी का स्मरण करता हूँ । हे हनुमान जी, मुझे बल, बुद्धि और विद्या दीजिए और मेरे क्लेश (दुख) और विकार (मन के दोष) दूर कीजिए ।

॥ चौपाई ॥

1 जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥

अर्थ: हे हनुमान जी, आपकी जय हो । आप ज्ञान और गुणों के सागर हैं । हे कपीश (वानरों के स्वामी), आपकी जय हो । आपकी कीर्ति तीनों लोकों में उजागर है ।

2 राम दूत अतुलित बल धामा ।

अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥

अर्थ: आप श्रीराम के दूत हैं और अतुलनीय बल के धाम हैं । आप अंजनी-पुत्र और पवनसुत (पवन देव के पुत्र) नाम से जाने जाते हैं ।

3 महावीर बिक्रम बजरंगी ।

कुमति निवार सुमति के संगी ॥

अर्थ: हे महावीर, आप बड़े पराक्रमी हैं और आपके अंग वज्र जैसे दृढ़ हैं । आप बुरी बुद्धि को दूर करते हैं और अच्छी बुद्धि वालों के साथी हैं ।

4 कंचन बरन बिराज सुबेसा ।

कानन कुंडल कुंचित केसा ॥

अर्थ: आपका रंग सोने जैसा है और आप सुंदर वेश में शोभा पाते हैं । आपके कानों में कुंडल हैं और बाल घुँघराले हैं ।

5 हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।

काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥

अर्थ: आपके हाथों में वज्र और ध्वजा शोभा पाते हैं, और कंधे पर मूँज का जनेऊ सजा है ।

- 6 संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
अर्थ: आप भगवान शंकर के अंश और केसरी जी के पुत्र हैं। आपका तेज और प्रताप महान है, सारा जगत आपकी वंदना करता है।
- 7 बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
अर्थ: आप विद्वान, गुणवान और बहुत चतुर हैं, और श्रीराम का काम करने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं।
- 8 प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लषन सीता मन बसिया ॥
अर्थ: आप प्रभु श्रीराम की कथा सुनने के रसिया (प्रेमी) हैं। श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी आपके मन में बसते हैं।
- 9 सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
अर्थ: आपने छोटा (सूक्ष्म) रूप धारण करके सीता जी को दर्शन दिया, और विकट (भयंकर) रूप धारण करके लंका जलाई।
- 10 भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचंद्र के काज सँवारे ॥
अर्थ: आपने भीम (विशाल) रूप धारण करके असुरों का संहार किया और श्रीरामचंद्र जी के काम सँवारे।
- 11 लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
अर्थ: आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी को जीवन दिया। तब श्री रघुबीर (श्रीराम) ने प्रसन्न होकर आपको हृदय से लगा लिया।
- 12 रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
अर्थ: श्री रघुपति (श्रीराम) ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा: तुम मुझे भरत के समान प्रिय भाई हो।
- 13 सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
अर्थ: “हज़ार मुखों वाले शेषनाग तुम्हारा यश गाते हैं”, ऐसा कहकर श्रीपति (श्रीराम) आपको गले लगाते हैं।
- 14 सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
अर्थ: सनक आदि ऋषि, ब्रह्मा आदि देवता, बड़े-बड़े मुनि, नारद जी, सरस्वती जी और शेषनाग भी आपका यश गाते हैं।
- 15 जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
अर्थ: यमराज, कुबेर और दिशाओं के रक्षक (दिक्पाल) भी आपका यश गाते हैं; फिर कवि और विद्वान उसका पूरा वर्णन कहाँ से कर सकते हैं।

16 तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।

राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

अर्थ: आपने सुग्रीव पर उपकार किया: उन्हें श्रीराम से मिलाया और राजा का पद दिलाया ।

17 तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।

लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥

अर्थ: विभीषण ने आपकी सलाह (मंत्र) मानी और वे लंका के राजा बने, यह सारा संसार जानता है ।

18 जुग सहस्र जोजन पर भानू ।

लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

अर्थ: जो सूर्य युग-सहस्र योजन दूर है, उसे आपने मीठा फल समझकर निगल लिया ।

19 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।

जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥

अर्थ: प्रभु श्रीराम की अँगूठी मुँह में रखकर आप समुद्र लाँघ गए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं ।

20 दुर्गम काज जगत के जेते ।

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

अर्थ: संसार में जितने भी कठिन काम हैं, वे सब आपकी कृपा से सरल हो जाते हैं ।

21 राम दुआरे तुम रखवारे ।

होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

अर्थ: आप श्रीराम के द्वार के रखवाले हैं । आपकी आज्ञा के बिना वहाँ कोई प्रवेश नहीं कर सकता ।

22 सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।

तुम रच्छक काहू को डर ना ॥

अर्थ: जो आपकी शरण में आता है, उसे सब सुख मिलते हैं । जब आप रक्षक हों, तो किसी का डर नहीं रहता ।

23 आपन तेज सम्हारो आपै ।

तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥

अर्थ: अपने तेज (शक्ति) को आप ही संभाल सकते हैं । आपकी हाँक (गर्जना) से तीनों लोक काँप उठते हैं ।

24 भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।

महावीर जब नाम सुनावै ॥

अर्थ: जब महावीर हनुमान जी का नाम लिया जाता है, तब भूत और पिशाच पास नहीं आते ।

25 नासै रोग हरै सब पीरा ।

जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥

अर्थ: वीर हनुमान जी का निरंतर जप करने से रोग नष्ट होते हैं और सारी पीड़ा दूर होती है ।

26 संकट तें हनुमान छुड़ावै ।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

अर्थ: जो मन, कर्म और वचन से हनुमान जी का ध्यान करता है, उसे हनुमान जी संकट से छुड़ाते हैं ।

- 27 सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥
अर्थ: तपस्वी राजा श्रीराम सबसे श्रेष्ठ हैं, और उनके सब काम आपने ही सँवारे ।
- 28 और मनोरथ जो कोड़ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
अर्थ: जो कोई भी आपके पास अपना मनोरथ (इच्छा) लेकर आता है, वह जीवन में उसका असीम फल पाता है ।
- 29 चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
अर्थ: चारों युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) में आपका प्रताप है, और आपका यश सारे जगत में प्रसिद्ध है और उसमें उजाला फैलाता है ।
- 30 साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अर्थ: आप साधु-संतों के रक्षक हैं, असुरों का नाश करने वाले हैं और श्रीराम के दुलारे हैं ।
- 31 अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥
अर्थ: आप आठ सिद्धियों और नौ निधियों के देने वाले हैं; यह वरदान आपको माता जानकी (सीता जी) ने दिया है ।
- 32 राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
अर्थ: आपके पास राम-भक्ति रूपी रसायन है, और आप सदा श्री रघुपति (श्रीराम) के दास बने रहते हैं ।
- 33 तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अर्थ: आपके भजन से भक्त श्रीराम को पा लेता है और जन्म-जन्म के दुख भूल जाता है ।
- 34 अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
अर्थ: ऐसा भक्त अंत समय में श्री रघुबर (श्रीराम) के धाम जाता है, और जहाँ भी जन्म ले, हरि-भक्त कहलाता है ।
- 35 और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
अर्थ: दूसरे देवताओं को मन में न रखकर भी, केवल हनुमान जी की सेवा से सब सुख मिल जाते हैं ।
- 36 संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
अर्थ: जो बलवीर हनुमान जी का स्मरण करता है, उसके संकट कट जाते हैं और सारी पीड़ा मिट जाती है ।

- 37 जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥
अर्थ: हे स्वामी (गोसाईं) हनुमान जी, आपकी जय हो, जय हो, जय हो । आप मुझ पर गुरुदेव की तरह कृपा कीजिए ।
- 38 जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
अर्थ: जो कोई इसका सौ (सत) बार पाठ करता है, वह बंधन से छूट जाता है और उसे महान सुख मिलता है ।
- 39 जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
अर्थ: जो यह हनुमान चालीसा पढ़ता है, उसे सिद्धि मिलती है; इसके साक्षी गौरीश (भगवान शिव) हैं ।
- 40 तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥
अर्थ: तुलसीदास सदा हरि (श्रीराम) के सेवक हैं । हे नाथ, मेरे हृदय में निवास कीजिए ।

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप ।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥
अर्थ: हे पवनपुत्र, आप संकट हरने वाले और मंगल की मूर्ति हैं । हे देवताओं के राजा, आप श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी के साथ मेरे हृदय में निवास कीजिए ।